Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 9, September - 2025

DOIs:10.2018/SS/202509004 --:-- Research Paper / Article / Review

विकसित भारत@2047: नव भारत की संकल्पना और रणनीतिक दिशा

डॉ. अंकित पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
सर्वोदय किसान पी.जी कॉलेज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
Email- ankitskpgpandey@gmail.com

सारांश : भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, और इसी ऐतिहासिक अवसर को ध्यान में रखते हुए "विकसित भारत@2047" की संकल्पना प्रस्तुत की गई है। यह शोधपत्र एक समग्र दृष्टिकोण से इस संकल्पना का विश्लेषण करता है, जिसमें प्रशासनिक सुधार, नीति निर्माण, नागरिक सहभागिता, और नव लोक सेवा सिद्धांत की भूमिका को केंद्र में रखा गया है। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए किन रणनीतिक पहलों की आवश्यकता है, और किस प्रकार प्रशासनिक संरचना को पुनर्परिभाषित किया जा सकता है। शोध में गुणात्मक पद्धति अपनाई गई है, जिसमें नीति दस्तावेजों, सरकारी रिपोर्टों, और सैद्धांतिक साहित्य की समीक्षा की गई है। प्रमुख निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि विकसित भारत की संकल्पना केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, और नागरिक केंद्रित शासन की ओर एक परिवर्तनकारी यात्रा है। नव लोक सेवा सिद्धांत इस दिशा में एक प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है, जो प्रशासन को सेवा, नैतिकता और सहभागिता की ओर प्रेरित करता है। यह शोध नीतिगत स्तर पर विचार-विमर्श को प्रोत्साहित करता है और सार्वजनिक प्रशासन के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं तथा नीति निर्माताओं के लिए एक उपयोगी संदर्भ प्रस्तुत करता है।

कुंजी शब्द : स्वतंत्रता, रणनीतिक, ऐतिहासिक, नागरिक सहभागिता, प्रशासनिक सुधार, नीति निर्माण ।

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा—यह केवल एक ऐतिहासिक पड़ाव नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्रचना का एक अवसर है। इस संदर्भ में "**विकसित भारत@2047**" की संकल्पना एक दीर्घकालिक दृष्टि है, जिसका उद्देश्य भारत को एक **समावेशी, आत्मनिर्भर, नवाचार-प्रेरित, और न्यायपूर्ण राष्ट्र** के रूप में स्थापित करना है। यह दृष्टिकोण केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें **सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, पर्यावरणीय संतुलन, और प्रशासनिक पारदर्शिता** जैसे बहुआयामी पहलुओं को समाहित किया गया है।

विकसित भारत की यह संकल्पना **अमृत काल** के रूप में परिभाषित 25 वर्षों की संक्रमण अवधि में साकार की जानी है, जिसमें नीति निर्माण, प्रशासनिक सुधार, और जनसहभागिता को एकीकृत कर एक समग्र विकास मॉडल तैयार किया जाना है। नीति आयोग, भारत सरकार, और विभिन्न मंत्रालयों द्वारा प्रस्तुत योजनाओं में इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु **रणनीतिक दिशा और सुधारों** की रूपरेखा दी गई है। **उदाहरणस्वरूप, गरीब, युवा, अन्नदाता, नारी को विकास** के चार स्तंभ मानते हुए समावेशी नीति निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य **"विकसित भारत@2047"** की संकल्पना को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझना है, तथा यह विश्लेषण करना है कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए किन प्रशासनिक, सामाजिक, और तकनीकी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। विशेष रूप से, नव लोक सेवा सिद्धांत की भूमिका इस प्रक्रिया में कितनी महत्वपूर्ण है, यह भी इस शोध का एक प्रमुख बिंदु है। यह सिद्धांत प्रशासन को सेवा, नैतिकता और सहभागिता की ओर प्रेरित करता है, जो विकसित भारत की नींव बन सकते हैं।

इस शोध में यह भी विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार भारत की संविधानिक मूल्यों, लोकतांत्रिक संस्थाओं, और सांस्कृतिक विविधता को सशक्त बनाकर एक ऐसे भारत की कल्पना की जा सकती है जो न केवल वैश्विक मंच पर नेतृत्व करे, बल्कि अपने नागरिकों को गरिमा, अवसर और समानता प्रदान करे।

2. शोध विधि (Research Methodology)

इस शोध में **गुणात्मक अनुसंधान पद्धति** (Qualitative Research Methodology) अपनाई गई है, जिसमें प्राथमिक रूप से सैद्धांतिक विश्लेषण और नीति दस्तावेजों की समीक्षा की गई है। शोध के लिए भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत विकसित भारत@2047 से संबंधित आधिकारिक रिपोर्टें, नीति आयोग के दस्तावेज, लोक प्रशासन से जुड़े शैक्षणिक ग्रंथ, तथा नव लोक सेवा सिद्धांत पर आधारित साहित्य का अध्ययन किया गया। साथ ही, विभिन्न शोध पत्रों, लेखों और भाषणों का तुलनात्मक विश्लेषण कर यह समझने का प्रयास किया गया कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में कौन-से रणनीतिक सुधार आवश्यक हैं। शोध में द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से विचारों की गहराई, प्रशासनिक दृष्टिकोण और नागरिक सहभागिता की भूमिका को स्पष्ट किया गया है।

3. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि (Theoretical Framework)

"**विकसित भारत@2047**" की संकल्पना को समझने के लिए हमें उन सैद्धांतिक आधारों की ओर देखना होगा जो लोक प्रशासन, जनसहभागिता, और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को दिशा प्रदान करते हैं। इस खंड में तीन प्रमुख सैद्धांतिक स्तंभों पर चर्चा की गई है: **नव लोक सेवा सिद्धांत**, **अमृत काल की अवधारणा**, और **भारतीय विकास दृष्टिकोण**।

1. **नव लोक सेवा सिद्धांत (New Public Service Theory)-** नव लोक सेवा सिद्धांत की उत्पत्ति 1990 के दशक में अमेरिका में हुई, जिसे Denhardt & Denhardt ने प्रतिपादित किया। यह सिद्धांत पारंपरिक प्रशासनिक मॉडल से हटकर नागरिकों को सेवाग्राही नहीं, बल्कि सहभागी मानता है। इसके प्रमुख तत्व हैं:
   - **नागरिक केंद्रित प्रशासन:** निर्णयों में नागरिकों की भागीदारी,
   - **सेवा की भावना:** प्रशासन का उद्देश्य लाभ नहीं, सेवा है,
   - **नैतिकता और पारदर्शिता:** निर्णयों में नैतिक मूल्यों का समावेश,
   - **सामूहिक उत्तरदायित्व:** प्रशासनिक संस्थाओं की जवाबदेही |

विकसित भारत की संकल्पना में यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह जनसहभागिता, सामाजिक न्याय, और प्रशासनिक पारदर्शिता को प्राथमिकता देता है।

2. **अमृत काल की अवधारणा-** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत **अमृत काल** की **अवधारणा 2022 से 2047** तक की 25 वर्षों की संक्रमण अवधि को दर्शाती है, जिसमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके अंतर्गत:
   - **दीर्घकालिक नीति निर्माण**
   - **संस्थागत सुधार**
   - **नवाचार और तकनीकी समावेशन**
   - **सांस्कृतिक पुनरुत्थान और आत्मनिर्भरता**

यह अवधारणा **सतत विकास लक्ष्यों (SDGs)** और **विकासशील से विकसित राष्ट्र की यात्रा** को एक रणनीतिक ढांचे में प्रस्तुत करती है।

3. **भारतीय विकास दृष्टिकोण-** भारतीय विकास मॉडल पश्चिमी देशों की नकल नहीं है, बल्कि यह संविधानिक मूल्यों, गांधीवादी विचारधारा, और समावेशी समाज की नींव पर आधारित है। इसके प्रमुख तत्व हैं:
   - **अंत्योदय:** सबसे अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुँचाना,
   - **सर्वजन हिताय:** नीति निर्माण में समावेशिता,
   - **संवैधानिक मूल्यों का समावेश:** न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व,
   - **सांस्कृतिक विविधता का सम्मान:** विविधता में एकता

यह दृष्टिकोण विकसित भारत की संकल्पना को भारतीयता, नैतिकता, और जनकल्याण से जोड़ता है।

विकसित भारत की संकल्पना (Concept of Viksit Bharat@2047)

"विकसित भारत@2047" केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक राष्ट्रीय दृष्टि है, जो भारत को स्वतंत्रता की शताब्दी तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की आकांक्षा रखती है। यह संकल्पना बहुआयामी है, जिसमें **आर्थिक समृद्धि, सामाजिक न्याय, प्रशासनिक पारदर्शिता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान**, और **नागरिक सशक्तिकरण** जैसे पहलुओं का समावेश है।

1. **आर्थिक दृष्टिकोण**
   - भारत को **$30 ट्रिलियन** की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य
   - **मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया,** और **डिजिटल इंडिया** जैसे अभियानों के माध्यम से नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा
   - वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की भूमिका को सुदृढ़ करना

- रोजगार सृजन और कौशल विकास पर बल

2. **सामाजिक दृष्टिकोण**
   - **गरीबी उन्मूलन**, **शिक्षा का सार्वभौमिककरण,** और **स्वास्थ्य** सेवाओं की पहुँच
   - लैंगिक समानता और समावेशी समाज का निर्माण
   - जनजातीय, अल्पसंख्यक, और हाशिए पर खड़े समुदायों को मुख्यधारा में लाना
   - सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार
3. **प्रशासनिक दृष्टिकोण**
   - पारदर्शिता, जवाबदेही, और जनसहभागिता को शासन का आधार बनाना
   - डिजिटल गवर्नेंस और AI आधारित निर्णय प्रणाली का विकास
   - सिविल सेवा सुधार, लेटरल एंट्री, और सक्षम संस्थागत ढांचे की स्थापना
   - स्थानीय शासन को सशक्त बनाना |
4. **सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टिकोण**
   - भारतीयता और संविधानिक मूल्यों का पुनरुत्थान
   - विविधता में एकता को राष्ट्रीय पहचान के रूप में सुदृढ़ करना
   - गांधीवादी विचारधारा, अंत्योदय, और सर्वजन हिताय को नीति निर्माण में समाहित करना
   - सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण और प्रचार

इस प्रकार, विकसित भारत की संकल्पना एक **समग्र विकास मॉडल** प्रस्तुत करती है, जिसमें केवल आर्थिक प्रगति नहीं, बल्कि **न्यायपूर्ण, नैतिक और सहभागी शासन** की स्थापना की आकांक्षा निहित है। यह दृष्टिकोण भारत को न केवल वैश्विक मंच पर नेतृत्व प्रदान कर सकता है, बल्कि अपने नागरिकों को गरिमा, अवसर और समानता भी सुनिश्चित कर सकता है।

4. रणनीतिक दिशा (Strategic Directions)

विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए केवल विचारों और घोषणाओं से काम नहीं चलेगा, बल्कि इसके लिए बहुस्तरीय रणनीतिक हस्तक्षेप आवश्यक हैं। इन रणनीतियों को प्रशासनिक सुधार, नीति निर्माण, तकनीकी समावेशन, और नागरिक सशक्तिकरण जैसे विविध क्षेत्रों में लागू करना होगा। नीचे प्रमुख रणनीतिक दिशाओं का विश्लेषण प्रस्तुत है:

1. **प्रशासनिक सुधार (Administrative Reforms)**
   - **नीतिगत सरलीकरण:** जटिल प्रक्रियाओं को सरल बनाना, विशेषकर लाइसेंसिंग, अनुमोदन और शिकायत निवारण में |
   - **लेटरल एंट्री और विशेषज्ञता:** प्रशासन में विषय विशेषज्ञों की भागीदारी बढ़ाना
   - **सिविल सेवा बोर्ड की स्थापना:** पारदर्शी पदस्थापन और मूल्यांकन प्रणाली
   - **ई-गवर्नेंस का विस्तार:** डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से सेवाओं की दक्षता और पारदर्शिता |
2. **नीति निर्माण में जनसहभागिता (Participatory Policymaking)**
   - **सार्वजनिक परामर्श मंच:** नीति निर्माण से पहले नागरिकों से सुझाव लेना
   - **स्थानीय शासन को सशक्त करना:** पंचायतों और नगर निकायों को अधिक अधिकार देना
   - **सामाजिक ऑडिट और जवाबदेही:** योजनाओं की निगरानी में जनता की भागीदारी
3. **समावेशी विकास के लिए लक्ष्य निर्धारण**
   - **गरीब, युवा, अन्नदाता, नारी:** इन चार स्तंभों के लिए विशेष योजनाएँ
   - **शहरी और ग्रामीण संतुलन:** दोनों क्षेत्रों में समान विकास
   - **शिक्षा और स्वास्थ्य पर निवेश:** मानव संसाधन को सशक्त बनाना
4. **तकनीकी नवाचार और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना**
   - **AI आधारित प्रशासन:** निर्णय प्रक्रिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग
   - **डिजिटल पहचान और वित्तीय समावेशन:** CKYC, आधार, और UPI जैसे प्लेटफॉर्म का विस्तार
   - **साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण:** डिजिटल भारत को सुरक्षित बनाना
5. **सांस्कृतिक पुनरुत्थान और नैतिक शासन**
   - **भारतीय मूल्यों का समावेश:** नीति निर्माण में गांधीवादी और संविधानिक दृष्टिकोण
   - **सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण:** पर्यटन, शिक्षा और मीडिया के माध्यम से प्रचार
   - **नैतिक नेतृत्व का विकास:** प्रशासन में नैतिकता और सेवा भावना को बढ़ावा

5. विकसित भारत के स्तंभ (Pillars of Viksit Bharat@2047)

भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत विकसित भारत@2047 की रणनीति में चार प्रमुख वर्गों को विकास के स्तंभ के रूप में चिन्हित किया गया है — **गरीब**, **युवा**, **अन्नदाता**, और **नारी**। इन वर्गों का सशक्तिकरण न केवल सामाजिक न्याय की दिशा में एक कदम है, बल्कि यह भारत को समावेशी और न्यायपूर्ण राष्ट्र बनाने की नींव भी है।

1. **गरीब (Marginalized & Economically Weaker Sections)**
   - **लक्ष्य:** गरीबी का पूर्ण उन्मूलन
   - **रणनीति:** सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, आवास, स्वास्थ्य बीमा, और पोषण
   - **प्रभाव:** आर्थिक आत्मनिर्भरता और गरिमामय जीवन
2. **युवा (Youth & Skill Force)**
   - **लक्ष्य:** भारत को विश्व की कौशल राजधानी बनाना
   - **रणनीति:** कौशल विकास मिशन, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल शिक्षा
   - **प्रभाव:** नवाचार, उद्यमिता और रोजगार सृजन
3. **अन्नदाता (Farmers & Rural Backbone)**
   - **लक्ष्य:** कृषि को लाभकारी और टिकाऊ बनाना
   - **रणनीति:** MSP सुधार, प्राकृतिक खेती, कृषि तकनीक का समावेश
   - **प्रभाव:** ग्रामीण समृद्धि और खाद्य सुरक्षा
4. **नारी (Women Empowerment)**
   - **लक्ष्य:** महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाना
   - **रणनीति:** महिला आरक्षण, स्वरोजगार योजनाएँ, शिक्षा और स्वास्थ्य
   - **प्रभाव:** लैंगिक समानता और समावेशी विकास

6. वैश्विक प्रतिस्पर्धा और भारत की भूमिका (Global Competitiveness and India's Emerging Role)

विकसित भारत@2047 की संकल्पना केवल आंतरिक सुधारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत को वैश्विक मंच पर नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करने की आकांक्षा भी रखती है। इसके लिए भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा, भूराजनैतिक संतुलन, और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के संदर्भ में अपनी भूमिका को पुनर्परिभाषित करना होगा।

1. **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की स्थिति**
   - चीन+1 रणनीति के तहत भारत को वैकल्पिक विनिर्माण केंद्र के रूप में देखा जा रहा है
   - मेक इन इंडिया और PLI योजनाएँ भारत को वैश्विक उत्पादन हब बनाने में सहायक
   - **सेमीकंडक्टर, फार्मा, टेक्सटाइल जैसे** क्षेत्रों में वैश्विक निवेश आकर्षित करना
2. **डिजिटल नेतृत्व और तकनीकी नवाचार**
   - भारत की UPI प्रणाली, आधार, और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना को वैश्विक मान्यता
   - AI आधारित प्रशासन और साइबर सुरक्षा में भारत की भूमिका निर्णायक
   - G20 अध्यक्षता के दौरान भारत ने डिजिटल समावेशन को वैश्विक एजेंडा बनाया
3. **जलवायु नेतृत्व और सतत विकास**
   - **अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन** और **LiFE** (Life Style For Enviorment) अभियान के माध्यम से भारत का पर्यावरणीय नेतृत्व
   - हरित हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, और सतत कृषि में भारत की पहल
   - SDGs के साथ भारत की नीतियों का समन्वय
4. **वैश्विक संस्थानों में भारत की भागीदारी**
   - UNSC स्थायी सदस्यता की मांग और BRICS, QUAD, G20 में सक्रिय भूमिका
   - वैश्विक दक्षिण की आवाज़ बनने की दिशा में भारत का प्रयास
   - शांति स्थापना, मानवीय सहायता, और वैक्सीन कूटनीति में भारत का योगदान

7. विकसित भारत की दिशा में चुनौतियाँ (Challenges in the Path of Viksit Bharat@2047)

विकसित भारत की संकल्पना जितनी प्रेरणादायक है, उतनी ही जटिल भी। इसे साकार करने के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है, लेकिन इन प्रयासों के समक्ष कई संरचनात्मक, सामाजिक, प्रशासनिक और तकनीकी चुनौतियाँ भी हैं। इनका समय रहते समाधान करना अनिवार्य है, अन्यथा यह संकल्पना केवल एक आदर्श कल्पना बनकर रह सकती है।

1. **नीति और कार्यान्वयन में अंतर**
   - अनेक योजनाएँ और घोषणाएँ तो होती हैं, लेकिन ज़मीनी स्तर पर उनका प्रभाव सीमित रहता है
   - नीति निर्माण और क्रियान्वयन संस्थाओं के बीच समन्वय की कमी
   - फंडिंग, मॉनिटरिंग, और फीडबैक तंत्र में पारदर्शिता का अभाव

2. **क्षेत्रीय और सामाजिक असमानता**
   - शहरी बनाम ग्रामीण, उत्तर बनाम दक्षिण, और विकसित बनाम पिछड़े राज्यों के बीच विकास का अंतर
   - जनजातीय, दलित, और अल्पसंख्यक समुदायों की मुख्यधारा में सीमित भागीदारी
   - लैंगिक असमानता और महिलाओं की सीमित राजनीतिक भागीदारी
3. **तकनीकी विभाजन और डिजिटल असमानता**
   - डिजिटल इंडिया की प्रगति के बावजूद डिजिटल साक्षरता में भारी अंतर
   - ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट पहुँच, डिवाइस उपलब्धता, और तकनीकी प्रशिक्षण की कमी
   - साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण की चुनौतियाँ
4. **प्रशासनिक जड़ता और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी**
   - पुरानी नौकरशाही संरचना में लचीलापन और नवाचार की कमी
   - राजनीतिक दलों में दीर्घकालिक दृष्टि की कमी; अल्पकालिक लाभ को प्राथमिकता
   - जनसुनवाई और जवाबदेही के तंत्र कमजोर
5. **पर्यावरणीय संकट और सतत विकास की चुनौती**
   - जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, और प्रदूषण जैसे मुद्दे
   - हरित विकास और सतत कृषि की दिशा में धीमी प्रगति
   - शहरीकरण के साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना

8. संभावनाएँ और सुझाव (Opportunities & Recommendations)

विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए भारत के पास अनेक अंतर्निहित शक्तियाँ और अवसर मौजूद हैं। यदि इनका समुचित उपयोग किया जाए, तो भारत न केवल आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हो सकता है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी एक वैश्विक आदर्श बन सकता है।

1. **जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग**
   - **संभावना:** भारत की युवा आबादी विश्व में सबसे बड़ी है।
     सुझाव: 1- कौशल विकास को प्राथमिकता दी जाए
     2- शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाया जाए
     3- स्टार्टअप और नवाचार को प्रोत्साहन मिले
2. **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का विस्तार**
   - **संभावना:** भारत की UPI, आधार और डिजिटल सेवाएँ वैश्विक मानक बन चुकी हैं।
     सुझाव: 1- ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल पहुँच बढ़ाई जाए
     2- सुरक्षा और डेटा संरक्षण को सुदृढ़ किया जाए
     3- डिजिटल साक्षरता अभियान चलाए जाएँ
3. **प्रशासनिक नवाचार और सुशासन**
   - **संभावना:** भारत में ई-गवर्नेंस और नीति सुधार की दिशा में प्रगति हो रही है।
     सुझाव: 1- सिविल सेवा में पारदर्शिता और दक्षता लाने हेतु सुधार
     2- जनसुनवाई, सामाजिक ऑडिट और फीडबैक तंत्र को मजबूत किया जाए
     3- नव लोक सेवा सिद्धांत को नीति निर्माण में समाहित किया जाए
4. **समावेशी विकास और सामाजिक न्याय**
   - **संभावना:** भारत की विविधता उसकी शक्ति है, यदि उसे समावेशी रूप से जोड़ा जाए।
     सुझाव: 1- हाशिए पर खड़े समुदायों को नीति निर्माण में भागीदार बनाया जाए
     2- महिला सशक्तिकरण को शिक्षा, स्वास्थ्य और नेतृत्व के माध्यम से बढ़ावा दिया जाए
     3- क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने हेतु लक्षित योजनाएँ बनाई जाएँ

5. **वैश्विक नेतृत्व की दिशा में भारत की भूमिका**
   - **संभावना:** भारत G20, BRICS और वैश्विक दक्षिण की आवाज़ बन चुका है।
     सुझाव: 1- जलवायु नेतृत्व, डिजिटल समावेशन और वैश्विक शांति में सक्रिय भागीदारी
     2- अंतरराष्ट्रीय सहयोग और रणनीतिक साझेदारियों को सुदृढ़ करना
     3- वैश्विक संस्थानों में भारत की भूमिका को सशक्त बनाना

9.निष्कर्ष (Conclusion)

"विकसित भारत@2047" केवल एक नीति संकल्पना नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय पुनर्जागरण की आकांक्षा है। यह भारत को न केवल आर्थिक दृष्टि से समृद्ध, बल्कि सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण, प्रशासनिक रूप से पारदर्शी, और सांस्कृतिक रूप से सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस शोधपत्र में प्रस्तुत विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत के पास वह जनशक्ति, सांस्कृतिक पूंजी, और संस्थागत ढांचा है, जो उसे वैश्विक नेतृत्व की भूमिका में स्थापित कर सकता है। शोध में यह पाया गया कि नव लोक सेवा सिद्धांत, अमृत काल की रणनीति, और समावेशी विकास के चार स्तंभ — गरीब, युवा, अन्नदाता, नारी— भारत को एक नैतिक और लोकतांत्रिक रूप से सशक्त राष्ट्र बनाने की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। साथ ही, प्रशासनिक सुधार, डिजिटल नवाचार, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की सक्रिय भागीदारी इस लक्ष्य को साकार करने में सहायक होगी। हालाँकि, इस दिशा में कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं — जैसे नीति और कार्यान्वयन में अंतर, क्षेत्रीय असमानता, तकनीकी विभाजन, और पर्यावरणीय संकट। इन बाधाओं को दूर करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, संस्थागत समन्वय, और नागरिक सहभागिता अत्यंत आवश्यक हैं।

अंततः विकसित भारत की संकल्पना एक सामूहिक राष्ट्रीय प्रयास है, जिसमें सरकार, नागरिक, संस्थाएँ और निजी क्षेत्र सभी की भूमिका निर्णायक है। यदि यह प्रयास नैतिकता, समावेशिता और नवाचार के मूल्यों पर आधारित हो, तो भारत 2047 में न केवल एक विकसित राष्ट्र होगा, बल्कि एक वैश्विक आदर्श भी।

संदर्भ सूची (References)

1. Denhardt, R., & Denhardt, J. (2000). The New Public Service: Serving, not steering. *Public Administration Review*, 60(6), 549–559.
2. नीति आयोग. (2024). *Vision India@2047: Transforming the Nation's Future*. Drishti IAS. https://www.drishtiias.com/
3. Press Information Bureau. (2024). *Developed India@2047: 9th Governing Council Meeting Summary*. https://pib.gov.in/
4. नीति आयोग. (2023). *Viksit Bharat@2047: Strategic Framework for Inclusive Development*. https://www.niti.gov.in/
5. PWOnlyIAS. (2025). *Developed India 2047: Historical Background and Existing Challenges*. https://www.pwonlyias.com/
6. World Bank. (2024). *Income classification and India's position*. *Annual GNI Report*. https://www.worldbank.org/
7. Ministry of Electronics & Information Technology. (2023). *Digital India Progress Report*. https://www.meity.gov.in/
8. Ministry of Rural Development. (2024). *Inclusive Growth and Aspirational Districts Strategy*. https://rural.nic.in/
9. NITI Aayog. (2023). *Administrative Reforms for Viksit Bharat*. https://www.niti.gov.in/
10. G20 India Presidency. (2023). *Digital Public Infrastructure and Global South Leadership*. https://www.g20.org/
11. Denhardt, R., & Denhardt, J. (2007). *The New Public Service: Serving, not steering* (Expanded ed.). M.E. Sharpe.
12. United Nations Development Programme. (2022). *Citizen-centric governance models in developing nations*. https://www.undp.org/
13. Indian Journal of Public Administration. (2021). *Ethics and accountability in Indian governance*, 67(3), 345–360.
14. Ministry of Women & Child Development. (2023). *Mission Shakti and Gender Equity Framework*. https://wcd.nic.in/
15. Ministry of Agriculture. (2024). *Natural Farming and Farmer Empowerment Strategy*. https://agricoop.nic.in/

16. Ministry of Skill Development and Entrepreneurship. (2023). *Skill India Annual Report*. https://www.skilldevelopment.gov.in/
17. Ministry of Social Justice and Empowerment. (2023). *Social Inclusion and Welfare Programs*. https://socialjustice.gov.in/
18. G20 India. (2023). *India's global role in digital and climate leadership*. https://www.g20.org/
19. World Economic Forum. (2024). *India's position in Global Competitiveness Index*. https://www.weforum.org/
20. Ministry of External Affairs. (2023). *India's strategic partnerships and Global South diplomacy*. https://www.mea.gov.in/
21. NITI Aayog. (2023). *Challenges in policy implementation and federal coordination*. https://www.niti.gov.in/
22. UNDP India. (2022). *Digital divide and inclusive governance in India*. https://www.undp.org/india
23. TERI. (2023). *Climate change and sustainable development in India*. https://www.teriin.org/